24-08-2022

कार्यकारी अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कानपुर (नगर छाया समाचार)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर मे तीन दिवसीय कार्यकारी अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन आनलाइन माध्यम से आज दि. 23.08.2022 से आरंभ हुआ। इस कार्यक्रम में देश व विदेश के विभिन्न चीनी उत्पादक राज्यों में स्थित चीनी कारखानों एवं आसवनियों में कार्यरत 100 से अधिक वरिष्ठ अधिकारी भाग ले रहे हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुये श्री सुधांशु पांडेय, सचिव (खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण भारत सरकार ने कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागियों का आह्वान करते हुये कहा कि शुगरकेन वैल्यू चेन के उचित उपयोग हेतु परंपरा से हटकर सोचना होगा। उन्होंने यह भी कहा कि चीनी उद्योग को सह-उत्पाद तथा अपशिष्ट से अनेक मूल्यवर्धित उत्पादों की आनुषंगिक इकाइयों की स्थापना से निवेश के नये स्त्रोत बनेंगें और इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे।

श्री सुबोध कुमार सिंह, संयुक्त सचिव (शर्करा, भारत सरकार ने अपने संबोधन में अपशिष्ट को संसाधन (वेस्ट टु रिसोर्स बनाने की बात पर बल देते हुये कहा कि इससे पर्यावरणीय संरक्षण के अलावा चीनी मिलों को राजस्व भी प्राप्त होगा। ईंधन में इथेनाल के मिश्रण के मामले में शर्करा उद्योग ने पहले से ही स्वयं को प्रमाणित किया है। कार्बन डाइआक्साइड जो आसवनियों के फर्मेन्टर्स से निकलती है, मूलतः व्यर्थ चली जाती है, जिसका हम भंडारित कर अन्य उद्योग यथा पेय पदार्थों में एवं उर्वरक उद्योग आदि में उपयोग कर सकते हैं। यहां तक कि शीरा आधारित आसवनी के इंसीनरेशन ब्वायलर की राख के उपयोग से पोटाश समृद्ध उर्वरक बनाये जा सकते है। जिससे किसानों के साथ-साथ मिल मालिकों के लिये भी लाभ की स्थिति उत्पन्न होगी।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर के निदेशक, श्री नरेन्द्र मोहन ने इस बात पर बल दिया और कहा कि समय आ चुका है कि अब केवल चीनी उत्पादक कारखानों को कृषि-व्यापार कांप्लेक्स में परिणत किया जाये और इसके लिये उन्होंने विभिन्न माडल भी सुझाये, जिसमें इन कांप्लेक्स में चीनी-हरित ऊर्जा-जैव-रसायन का उत्पादन हो सके। उन्होंने कहा कि माडल का चयन इस आधार पर करना चाहिये जिसमें कच्चे माल की उपलब्धता, ईंधन और आर्थिक व्यवस्था तीनों का ध्यान रखा जाये। यह माडल आत्मनिर्भर माडल हो जहां पर्याप्त मात्रा में कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित हो। इसके लिये चीनी कारखानों की क्षमता के अनुरूप पेराई की जाये इससे निकले फीड स्टाक से इथेनाल इकाइयों को वर्ष भर कच्चा माल प्राप्त हो तथा चीनी कारखाने से निकले बगास की उपलब्धता वर्ष भर इथेनाल इकाइयों एवं आसवनियों को प्राप्त हो सके ताकि उनकी ईंधन की आवश्यकता पूरी हो जाय।

डॉ. पी. मुरली, वरिष्ठ वैज्ञानिक (एग्रोनामिक्स, गन्ना प्रजनन अनुसंधान संस्थान, कोयंबटूर ने अपने संबोधन में प्रतिभागियों से वैल्यू चैन प्रबंधन एवं स्वीटनर्स के निर्यात में अवसर के बारे में बताया। निर्यात के संदर्भ में विमर्श के दौरान उन्होंने वैल्यू चैन पर बात की और कहा कि स्प्रेड और स्वीटनर के उपयोग का क्षेत्र व्यापक है। मुरब्बा, चाकलेट, स्प्रेड, पीनट बटर, शहद शर्करा और कृत्रिम स्वीटनर सभी इससे जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 2022 में स्प्रेड और स्वीटनर से 10.40 बिलियन अमेरिकी डालर की आय प्राप्त हुई। 2014-19 के दौरान मिष्ठान्न भंडार के बाजार में 19.49 प्रतिशत की दर से विस्तार हुआ है जो भारतीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी से ज्यादा है।

प्रथम दिन के कार्यक्रम में डॉ. एम.एस. सुंदरम, निदेशक, जे.पी.मुखर्जी एंड एसोसियेट्स के द्वारा परियोजना प्रबंधन पर प्रस्तुति दी गयी तथा श्री विनय कुमार, सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने चीनी कारखानों में ऊर्जा संरक्षण पर प्रस्तुति दी।

चीनी उद्योग को सह–उत्पाद व अपशिष्ट से अनेक मूल्यवर्धित उत्पादों को मिले बढ़ावा

कानपुर, 23 अगस्त। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आज तीन दिवसीय कार्यकारी अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन आनलाइन के माध्मय से हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए (खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण)सचिव सुधांशु पांडे ने कार्यक्रम में शामिल प्रतिभागियों का आह्वान करते हुए कहाकि शुगरकेन वैल्यू चेन के उचित उपयोग हेतु परंपरा से हटकर सोचना होगा। उन्होंने यह भी कहाकि चीनी उद्योग को सह उत्पाद तथा अपशिष्ट से अनेक मूल्यवर्धित उत्पादों की आनुषंगिक इकाइयों की स्थापना से निवेश के नये स्त्रोत बनेंगे और ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे। संयुक्त सचिव सुबोध कुमार संह ने अपशिष्ट को संसाधन बनाने पर जोर दिया, ताकि पर्यावरण संरक्षण के अलावा चीनी मिलो को राजस्व प्राप्त हो। ईधन में इथेनाल के मिश्रण के मामले में शर्करा उद्योग ने पहले से ही स्वयं को प्रमाणित किया। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि अब केवल चीनी उत्पादक कारखानों को कृषि व्यापार कांप्लेक्स मे परिणत किया जाये और इसेक लिए उन्होंने विभिन्न माडल भी सुझाये। जिसमें इन कांप्लेक्स में चीनी हरित ऊर्जा जैव रसायन का उत्पादन हो सके। उन्होंने कहाकि माडल का चयन इस आधार पर करना चाहिये। जिसमें कच्चे माल की उपलब्धता, ईधन और आर्थिक व्यवस्था तीनों पर ध्यान रखा जाये। यह माडल आत्मनिर्भर माडल हो जहां पर्याप्त माता में कच्चे माल की उपलब्धता सुनिश्चित हो। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. पी. मुरली ने प्रतिभागियों से वैल्यू चैन प्रबंधन एवं स्वीटनर्स के निर्यात में अवसर पर प्रकाश डाला। प्रथम दिन कार्यक्रम में डा. एम.एस. सुंदरम, जे.पी. मुखर्जी, विनय कुमार आदि ने अपने व्याख्यान प्रस्तुति किये।

कार्यक्रम में शामिल सचिव सुधांशु पांडे, निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

Executive Development Programme inaugurated

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

Secretary (Food & Public Distribution), Government of India, Sudhanshu Pandey, while inaugurating the three day Executive Development Programme at National Sugar Institute (NSI) on Tuesday called upon the participants for developing an "out of box thinking" for exploiting the potential of entire sugarcane value chain. He underlined the need for setting up ancillary units to produce many value-added products from byproducts and waste so as to bring new investments and create newer job opportunities thus bringing prosperity in rural areas. Joint Secretary (Sugar), Government of India Subodh Kumar Singh in his address stressed upon converting so called "Waste to Resource" and for utilisation of by-products in a better manner. He said sugar industry already had proved itself as regards ethanol blending was concerned. He said while carbon dioxide from distillery fermenters, generally going waste, can be captured for use in other industries like beverage and fertiliser etc, even the ash from incineration boilers in molasses based distilleries can be a potential source for manufacture of potash rich fertilisers. He said this will bring a win-win situation for the farmers and millers. NSI Director Narendra Mohan stressed upon need for converting standalone sugar factories into 'agri business complexes' and presented various models of such complexes producing sugar-green energy-biochemicals. He said the model was to be chosen looking to availability of raw material, fuel and system economics. He said the model should be an "Atmanirbhar Model" where adequate raw material was available to commensurate with crushing capacity of sugar factory, diversion of feed stocks from sugar factory was to be regulated in such a manner to ensure operation of ethanol unit round the year and to have bagasse to meet requirement of sugar factory and distillery round the year.

Dr P Murali, Senior Scientist (Agronomics), Sugarcane Breeding Research Institute, Coimbatore addressed the participants on the topic "Value chain management and export opportunities in sweeteners". Discussing about export avenues for value chain, he informed that spreads and sweeteners segment covered marmalade, chocolate, spreads, peanut butter, honey, sugar and artificial sweeteners. He said revenue in the spreads and sweeteners segment was expected to value US $ 10.40 bn in 2022. He said in the past five years confectionery store market witnessed a growth of 19.49 per cent from which was higher than Indian GDP growth.

On the first day of the programme, presentations were also made by Dr MS Sundaram, Director, JP Mukherjee & Associates on key attributes of project management and by Vinay Kumar, Assistant Professor of Sugar Engineering, National Sugar Institute, Kanpur, on energy saving potential in sugar industry. Three day "Executive Development Programme" organised by NSI, Kanpur, on virtual platform commenced on Tuesday and was attended by more than 100 senior officials from sugar factories, distilleries and manufacturing units from various sugar producing states of the country and abroad as well.

चीनी मिलों के लिए आत्मनिर्भर मॉडल पर बनाए व्यापार कांप्लेक्स

आयोजन

● **एनएसआई में शुरू हुए अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिया सुझाव**

अमृत विचार, कानपुर। चीनी मिलों को कृषि व्यापार कांप्लेक्स में परिवर्तित करने का समय आ गया है। इसका मॉडल पूरी तरह से आत्मनिर्भर मॉडल पर तैयार किया जाए, जिससे उर्जा, कच्चा माल और आर्थिक व्यवस्था बेहतर हो सके।

यह सुझाव नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) में मंगलवार से शुरू हुए अधिकारी प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने दिया। उन्होंने कहा कि चीनी कारखानों की क्षमता के अनुरूप पेराई की जाए, जिससे निकलने वाले फीड स्टॉक से इथेनॉल इकाइयों को साल भर कच्चा माल प्राप्त हो सकगा। गन्ने की खोई इथेनॉल इकाइयों को ईधन की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगी। खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण सचिव सुधांशु पांडेय ने शुगरकेन वैल्यू चेन के बारे में जानकारी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि चीनी मिलों को सह उत्पादों और अपशिष्ट से मूल्यवर्धित उत्पाद तैयार करने वाली इकाइयां स्थापित करनी चाहिए, जिससे न सिर्फ आर्थिक लाभ मिलेगा, बल्कि रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। संयुक्त सचिव शर्करा ने अपशिष्ट को संसाधन बनाने पर जोर दिया।